डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का पाँचवा दिन
अनुवाद पुनर्कथन के रूप में विषय पर परिसंवाद
पूर्वोत्तरी कार्यक्रम एवं शेखर सेन द्वारा मध्ययुगीन काव्य पर सांगीतिक प्रस्तुति
अनुवादक का विवेक ही अनुवाद को सुंदर बनाता है – सत्यव्रत शास्त्री
भाषा जितनी ही सहज उसका अनुवाद उतना ही कठिन – रणजीत साहा

नई दिल्ली। 16 फरवरी 2018 – साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव 2018 के पाँचवें दिन विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला में 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात संस्कृत विद्वान एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य सत्यव्रत शास्त्री ने दिया। उन्होंने संस्कृत साहित्य के अनुवाद के समय आई अपनी समस्याओं से बात शुरू करते हुए कहा कि मैं अनुवाद के समय एक ही मूल मंत्र याद रखता हूँ और वह है 'अनुवाद में भाव मूल के रहेंगे और भाषा अनुवादक की होगी'। उन्होंने अपने द्वारा किए गए अनुवाद से उदाहरण देते हुए कहा कि वे विभिन्न भाषाओं के शब्द, मुहावरे आदि को अनुवाद में प्रयोग करने से कभी भी नहीं हिचकते हैं। किसी भी शब्द का सही अनुवाद न होने से बहुत सी भ्रांतियाँ फैल जाती हैं और उनका निदान लंबे समय तक नहीं हो पाता है। उन्होंने अनुवादकों से अनुरोध किया कि वे अपने काम को कमतर न समझें। उनका काम तो सृजनात्मक लेखन से भी कठिन है। इस मायने में वे भी सृजक हैं और उनको उचित सम्मान मिलना ही चाहिए।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता रणजीत साहा ने की और आलोक गुप्त ने 'भारतीय चिंतन में अनुवाद का तात्पर्य, अनामिका ने 'पाश्चात्य चिंतन में अनुवाद का तात्पर्य' और तरसेम ने 'तात्पर्य की तार्किकता' पर अपने विचार व्यक्त किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता ओ.एल. नागभूषण स्वामी ने की और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अंशुमान कर तथा वनमाला विश्वनाथ ने अनुवाद की चुनौतियों पर अपनी बात रखी।

पूर्वोत्तरी कार्यक्रम में उत्तर–पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन में उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित लेप्चा गीतकार एवं लोक संगीतकार सोनम छिरिङ लेप्चा दिया। कहानी–पाठ सत्र की अध्यक्षता एस. आर. हरनोट ने की। गोविंद प्रसाद शर्मा (असमिया), टिकेंद्र मल्ल बसुमतारी (बोडो) तथा निङ्गोंबम सनतोंबी देवी (मणिपुरी) ने अपना कहानी–पाठ किया।

कार्यक्रम का प्रथम सत्र 'मेरी रचना मेरा संसार' विषयक परिचर्चा थी, जिसका संयोजन येसे दरजे थोंगछी ने किया तथा मंगल सिंह हाजोवारी (बोडो), शिवमूर्ति (हिंदी) एवं यशोधारा मिश्र (ओड़िया) ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र कविता पाठ पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता लीलाधर जगूड़ी ने की तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के 14 कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। ये कवि थे ज्योतिरेखा हाज़रिका (असमिया), रश्मि चौधुरी (बोडो), विजय वली (कश्मीरी), नारायण जी (मैथिली), इंदुप्रभा देवी (नेपाली), शंकर सिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), रामशंकर अवस्थी (संस्कृत), क़मर सुरूर (उर्दू), संजय चक्रवर्ती (बाङ्ला),

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

प्रोमिला मन्हास (डोगरी), एन.टी. लेप्चा (लेप्चा), तोंग्ब्रम अमरजीत सिंह (मणिपुरी), रविंदर (पंजाबी), यशोदा मुर्मू (संताली)। इन सभी ने अपनी कविताओं के पाठ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम में पंजाबी कवि मनमोहन, हिंदी कवि मंगलेश डबराल तथा नेपाली जीवन नामदुंग सहित साहित्य प्रेमियों की अच्छी उपस्थिति रही।

'भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण' विषयक संगोष्ठी का आज दूसरा दिन था, जिसमें 'संकट में राष्ट्र : उन्नीस सौ पचास एवं साठके दशक में भारत तथा साहित्य', 'भारतीय भाषाओं में युद्ध साहित्य', 'राजनीतिक उपकरण के रूप में आपातकाल और लेखन', 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य की भूमिका' विषयों पर क्रमशः के. सच्चिदानंदन, भालचंद्र नेमाड़े, एच.एस. शिवप्रकाश एवं सुधीश पचौरी की अध्यक्षता में विचार–विमर्श किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत आज लब्धप्रतिष्ठ, गायक, संगीतकार, और रंग–व्यक्तित्व शेखर सेन ने मध्ययुगीन काव्य पर केंद्रित सांगीतिक प्रस्तुतियाँ दीं। इस प्रस्तुति में उन्होंने सूरदास, रहीम, रसखान, नरोत्तम दास, ताजबीबी, घोंधी नायक, शेख़ आलम वाहिद एवं ललित किशोरी आदि महान संत कवियों की रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

ह./–
(के. श्रीनिवासराव)